موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 2

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

शीर्षक:

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े—क़िस्त 2

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَـــه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्धारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًاوَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون﴾.

अर्थातःक्या तुम यह सोचते हो कि हमने तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए ही न जाओगे।

ए मोमिनो! पिछले दो उपदेशों में आखेरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े से संबंधित बात की गई,जो कि यह हैंःसूर में फूंक लगाना,क़यामत की विशाल चिंह,मख्लूकों(जीवों) का दोबारा उठाया जाना,लोगों को महशर के मैदान(जहां मरणोपरांत पुनः **इकट्ठा** किया जाएगा)में जमा करना,और आज हम इन्शा अल्लाह चर्चा करेंगे महशर के मैदान में घटने वाले घटनाओं के कुछ विवरणों के विषय में।
अल्लाह के बंदो!महशर के मैदान में चार चीजें घटित होंगीः
1.लोग घबराए हुए होंगे,इसका प्रमाण सूरह अलहज के आरंभ में अल्लाह तआला का यह कथन हैः

﴿إن زلزلة الساعة شيء عظيم * يوم تروٰنها تذهل كل مرضعة عما أرضعت وتضع كل ذات حمل حملها وترى سكارى وما هم بسكارى ولكن عذاب الله شديد﴾.

अर्थातःनिसंदेह क़यामत का भूकंप बड़ी चीज़ है जिस दिन तुम उसे देख लोगे हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी,और सारे गर्भवतियों का गर्भ गिर जाएंगे और तू देखेगा कि लोग मदहोश दिखाई देंगे,जब्कि वे वास्तव में बेहोश न होंगे लेकिन अल्लाह की यातना बड़ा कठोर है।
उसकी कठोरता एवं क्रूरता का यह आलम होगा कि लोगों की सोच समझ असंतुलित हो जाएगी और उनके लिए यह जानना कठिन हो जाएगा कि वे दुनिया में कितने काल तक रहे,कोई कहेगाः ﴿إن لبثتم إلا **عشرا**﴾

अर्थातःहम तो दुनिया में मात्र दस दिन ही रहे।

और कोई कहेगाः ﴿لبثنا **يوما** أو **بعض يوم** فاسأل العادين﴾

अर्थातःएक दिन अथवा एक दिन से भी कम,गिनती गिनने वालों से भी पूछ लीजिए।
एक अन्य आयत में अल्लाह तआला उनके प्रति फरमाता हैः

﴿ويوم تقوم الساعة يقسم المجرمون ما لبثوا غير **ساعة**﴾.

अर्थातःजिस दिन क़यामत आऐगी पापी लोग कसमें खाएंगे कि(दुनिया मेंदुनिया में)एक घड़ी के सिवा नहीं ठहरे।

उस दिन की कठोरता एवं भीषण भयानकता का आलम यह होगा कि लोग एक दूसरे से ग़ाफिल होंगे,अल्लाह का कथन हैः

﴿يوم يفر المرء من أخيه * وأمه وأبيه * وصاحبته وبنيه * لكل امرىء منهم يومئذ شأن يغنيه﴾.

अर्थातःउस दिन मनुष्य अपने भाई से और अपनी माता और पिता से,और अपनी पत्नी और अपनी औलाद से भागंगे।उनमें से प्रत्येक को उस दिन ऐसी चिंता होगी जो उसके लिए प्रयाप्त होगी।

अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन जिन लोगों को घबराहट होगी वे पापी होंगे जैसे काफिर,बिदअ़ति(नवाचारी)और अवज्ञाकारी मोमिन,अल्लाह का कथन है:

﴿وكان يوما على الكافرين عسيرا﴾

अर्थातःयह दिन काफिरों पर बड़ा भारी होगा।

किंतु जो पक्के ईमान वाले होंगे तो वे उससे निर्भय होंगे,वे ऐसे लोग होंगे जिन्होंने अल्लाह की आज्ञा की और अल्लाह के ह़राम किए हुए चीजो से स्वयं को बचाए रखा,अतःजो व्यक्ति संसार में अल्लाह से डरता है,अल्लाह उसे आखिरत में निर्भय कर देगा,और जो व्यक्ति संसार में अल्लाह से निर्भय रहता है,उसे क़्यामत के दिन भयभीत कर देगा,यह अल्लाह तआ़ला के न्याय का तक़ाज़ा है कि वह बंदा को न दोनों संसार में शांति देता है और न दोनों दुनिया में भय में रखता है,अतःजो(स्वयं को)अल्लाह से दुनिया में निर्भय समझे उसे आखिरत के दिन अल्लाह तआ़ला भय में रखता है,अल्लाह तआ़ला सत्य मोमिनों के प्रति फरमाता है:

﴿**لا يحزنهم** الفزع الأكبر وتتلقاهم الملائكة﴾

अर्थातःवह बड़ी घबराहट भी उन्हें उदास न कर सकेगी और देवदूत उन्हें हाथों हाथ लेंगे।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः ﴿وهم من **فزع** يومئذ آمنون﴾

अर्थातःवे उस दिन की घबराहट से निर्भय हांगे।

तथा अल्लाह का कथन है: ﴿أفمن يُلقى في النار خير أمَّن يأتي **آمنا** يوم القيامة﴾.

अर्थातः(बतलाओ तो)जो आग में डाला जाएगा वा अच्छा है अथवा जो शांति के साथ क़्यामत के दिन आए?

2.मेह़शर के मैदान में जो घटना घटेंगे उनमें एक यह भी कि सूर्य जीवों से निकट हो जाएंगा,यहां तक कि एक मील की दूरी पर होगा,एक कथन है कि उसका अर्थ सुरमेदानी का मील(सलाई)है,और अन्य कथन है कि उसका अर्थ एक

मील की दूरी है,चाहे इसका अर्थ यह हा अथव वह हर स्थिति में सूर्य सरों से बिल्कुल निकट हो जाएगा।[1]

यदि पूछा जाए किःक्या कोई ऐसा भी होगा जो सूर्य की गर्मी से सुरक्षित रहेगा?तो उत्तर है किःहां,कुछ ऐसे लोग भी होंगे जिन को अल्लाह तआ़ाला उस दिन सूर्य की गर्मी से सुरक्षित रखेगा,उनमें से वे सात प्रकार के लोग होंगे जिन को अल्लाह तआ़ाला अपने(अ़र्श के)छाए में स्थान देगा,उस दिन जब उस(अ़र्श)के छाए के अतिरिक्त कोई छाया न होगा,इसका अर्थ वह छाया है जिसे अल्लाह तआ़ाला पैदा करेगा,वह अ़र्श का छाया होगा,उसके माध्यम से अनेक लोग उस दिन सूर्य से बच जाएंगे,अल्लाह तआ़ाला हमें भी उन स्वभागियों में शामिल फरमाए।वे न्याय प्रिय इमाम होगा,अथवा वह युवा होगा जिसकी जवानी अल्लाह की आज्ञा में गुजरी होगी,दो ऐसे लोग होंगे जिन्हों ने अल्लाह के लिए आपस में प्रेम की होगी,उसी प्रेम के लिए **इकट्ठा** हुए होंगे और उसी प्रेम अलग हुए होंगे,और एक ऐसा व्यक्ति होगा जिस का दिल मस्जिद से लगा रहता ह,मस्जिद के बाहर आने से ले कर वापस जाने तक मस्जिद से ही उसका दिल अटका होता है,और एक वह व्यक्ति होगा जिस ने अकेला में अल्लाह को याद किया होगा और उसकी आंखें बह पड़ी होंगी, और वह व्यक्ति जिसे किसी पद वाली एवं खांदानी सुन्दर युवती ने अपने साथ पाप करने का न्योता दिया होगा किंतु उसने यह कह कर टाल दिया होगा किः(में अल्लाह से डरता हूं)और एक वह व्यक्ति होगा जिसने एतना छिपा कर सदका़(दान)किया होगा कि दाएं हाथ से जो कुछ खर्च किया,बाएं हाथ को भी उसकी भनक न लगी होगी।[2]

3.ह़शर के मैदान में जो दृश्य होंगे,उन में यह भी है कि लोग पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाज़(कुंड)पर आएंगे जो मह़शर के मैदान में होगा,उससे वे मोमिन बंदे सैराब होंगे जो इस्लाम पर स्थिर रहते हैं,और उस हो़ज़ से दो प्रकार के लोगों को दूर भगा दिया जाएगाःएक वे जो इस्लाम लाने के पश्चात मुर्तद(नास्तिक)हो गया,जैसे वे लोग जो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मृत्यु के पश्चात मुर्तद हो गए,और उन्हीं के जैसे वे लोग भी होंगे जो क़यामत तक इर्तेदाद(नास्तिकता)के शिकार होंगे।द्वितीय प्रकार बिदअ़तियों(नवाचारों)की होगी,चाहे को़लो(कथनी)बिदअ़त हो

---

[1] देखेंःसही़ मुस्लिम(2864)

[2] इस ह़दीस को बोखारी(660)और मुस्लिम(1013)ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है।

अथवा अ़मली(कार्य),उन्हें भी ह़ौज़ से दूर रखा जाएगा जैसे अनरिचित ऊंटनी को पनघट से दूर भगाया जाता है।[3]

उस ह़ौज़ में स्वर्ग की कौसर नहर से दो प्रणाले गिर रहे हैं,कौसर का अर्थ होता है अति अच्छाई एवं भलाई,उस ह़ौज़ की लंबीई एक महीने की दूरी के बराबर है,उस पर आकाश के सितारों की संख्या में पियाले हैं,उसका पानी दूध से अधिक सफेद है,उसकी खुशबू मुश्क से अधिक उत्तम है,उसका स्वाद मधु से अधिक मीठा है,तो व्यक्ति एक बार उसको पीलेगा उसे कभी प्यास नहीं लगेगी,उसमें स्वर्ग से दो प्रणाले गिर रहे हैं,एक सोने का और दूसरा चांदी का,उसकी चौड़ाई उसकी लंबाई के जैसा है,जितनी सना और मदीना के बीच की दूरी है।[4]

अल्लाह के बंदो!नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ह़ौज़ अभी भी अस्तित्व में है,जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैःअल्लाह की क़सम!में अभी भी अपने ह़ौज़ को देख रहा हूं।[5]

ह़ौज़ के प्रति एक रिवायत यह भी है कि प्रत्येक संदेशवाहक का एक ह़ौज़ है,जैसा कि पैगन्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"क़यामत के दिन प्रत्येक पैगंबर के लिए एक ह़ौज़ होगा,और वे आपस में एक दूसरे पर गर्व करेंगे कि किस के ह़ौज़ पर पानी पीने वालों की अधिक भीड़ होगी,और मुझे आशा है कि मेरे ह़ौज़ पर(अल्लाह के कृपा से)सबसे अधिक लोग जमा होंगे"।[6]

यह अल्लाह तआ़ला की नीति एवं बंदों के प्रति उसकी दया का एक दृश्य है,ताकि पूर्व(मिल्लतों के)मोमिन भी उन पैगंबरों के ह़ौज़ से सैराब हो सकें जिनका उन्हों ने अनुगमन किया,ताकि उनको पूरा पूरा बदला मिले।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित

---

[3] देखें:सह़ी मुस्लिम(2302)

[4] ह़ौज़ से संबधित आई ह़दीस के लिए देखें:"सह़ बोखारी",किताबुल रिक़ाक़,अलह़ौज़ खण्ड में,इसी प्रकार से"सह़ी मुस्लिम",किताबुल फज़ाइल,खण्ड इस्बाते ह़ौज़े नबीयेना(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)व सिफातेहि।

[5] इसे बोखारी(6590)और मुस्लिम(2296)ने उ़क़्बा बिन आ़मिर रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

[6] इसे ह़दीस को तिरमिज़ी(2443)ने सुमरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है और अल्बानी ने इसे सह़ी कहा है जैसा कि"अस्सह़ीह़ा"(1589)में है।

फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

4.आप जान लें—अल्लाह आप पर कृपा करे—कि क़्यामत के दिन ह़श्र के मैदान में जो दृश्य होंगे उनमें शिफाअ़ते उ़ज़मा(भव्य अनुशंसा)भी होगी,वह इस प्रकार कि क़्यामत के दिन सारे लोग,चाह वे मोमिन हों अथवा काफिर,बहुत दैर तक खड़ो रहेंगे,अतः(थक हार कर)पैगंबरों के पास जाएंगे कि वे उनके रब के पास हिसाब व किताब को आरंभ करने की अनुशंसा करें,ताकि सारे लोग अपनी अपनी मंजिल तक पहुंच सकें,अथवा तो स्वर्ग की नेमत(आशीर्वादों)में जाएं अथवा नरक में,किंतु पॉच संदेशवाहक उनसे क्षमा लेलेंगेःआदम,नूह़,इब्राहीम,मूसा एवं ईसा अलैहिमुस्सलाम,फिर ईसा अलैहिस्सलाम उनको मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजेंगे,अतःवे आपके पास जाएंगे और फरमाएंगेः(में अनुशंसा के लिए आया हूं)।फिर आप अ़र्श के नीचे स्जदे में गिर जाएंगे और जब तक अल्लाह चाहेगा आप स्जदा ही में रहेंगे,फिर अल्लाह तआ़ला आपको अपनी प्रशंसा एवं उत्तम स्तुति के शब्दों का इल्हाम करेगा जो आप से पूर्व किसी को नहीं दिए गए,फिर आपसे कहा जाएगाः(ए मोह़म्मद!अपना सर उठाओ,जो कहो वह सुना जाएगा,जो मांगो वह प्रदान किया जाएगा,जो अनुशंसा करो स्वीकार किया जाएगा),फिर आप अल्लाह के निकट मह़शर के मैदान में खड़े हुए बंदों के लिए हिसाब व किताब की सिफारिश करेंगे,अतःअल्लाह तआ़ला आपकी सिफारिश स्वीकार फरमा कर हिसाब व किताब को आरंभ करेगा आर अपने बंदों के समक्ष निर्णय करेगा,चाहे वे मोमिन हों अथवा काफिर,आदम से लेकर क़्यामत होने तक के(समस्त बंदों का निर्णय करेगा)।

यही वह शिफाअ़त(अनुशंसा)है जिसे अल्लाह तआ़ला के इस कथन में मक़ामे मह़मूद (प्रशस्त स्थान)कहा गया हैः (عسى أن يبعثك ربك مقاما محمودا)

अर्थातःनिकट ही आपका रब आपको मक़ामे मह़मूद में खड़ा करेगा।

वह ऐसा स्थान है जिस पर पदस्थापित होने के पश्चात क़यामत के दिन समस्त पूर्व एवं पश्चात में आने वाले लोग आपकी प्रशंसा करेंगे और उसके कारण आप पर ईर्ष्या करेंगे,क्योंकि हिसाब व किताब को आरंभ करने में समस्त मख़लूक़ों(जीवों)पर आप का कृपा होगा,चाहे वे मोमिन हों अथवा काफिर,मनुष्य हो अथवा जिन्न।
इस शिफाअ़त(अनुशंसा)के महत्व के कारण विद्धानों ने इसे शिफाअ़ते उ़ज़मा(भव्य अनुशंसा)का नाम दिया है,और क़यामत के दिन की जाने वाली यह र्स्वप्रथम शिफाअ़त होगी।
ए अल्लाह के बंदो!ये चार कार्य जिनका उल्लेख हुआ,क़यामत के दिन ह़श्र के मैदान में घटित होने वाले दृश्य हैं,मुस्लिम बंदे को चाहिए कि स्वेद इन दृश्यों को सामने रखे ताकि अल्लाह का भय बना रहे,फलस्वरूप पुण्य के कार्यों के लिए त्यार हो और अल्लाह तआ़ला को नाराज़ करने वाले कार्यों से स्वयं को बचाके रखे।

*आप यह भी जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि शुक्रवार के दिन और रात में आपका सर्वश्रेष्ठ कार्य यह है कि आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजें,हे अल्लाह!अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्मद पर दरूद नाज़िल कर,आपके उत्तराधिकारी से प्रसन्न होजा,जो सत्य मार्ग पर स्थिर एवं मुसलमानों के ईमाम थे,तथा उनके अनुयायियों एवं क़यामत तक सत्य निष्ठा के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

*हे अल्लाह!इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,और अपने धर्म की रक्षा कर,हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,तू अपने और इस्लाम के शत्रुओं को नाश करदे,और अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा।

*हे अल्लाह!हमें अपने देशों में शांति का जीवन प्रदान कर,हे अल्लाह!हमारे इमामों एवं हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक एवं हिदायत पर चलने वाला बना दे।

*हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक़(शक्ति)प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए कृपा का कारण बना।

*हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की प्रार्थना करते हैं जो हमको मालूम है और जो नहीं मालूम,और हम तेरा शर्ण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त बुराइयों से जो हमको मालूम है और मालूम नहीं।

*हे अल्लाह!हम तुझसे स्वर्ग मांगते हैं और वे कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कथन एवं काय से भी जो नरक से निकट करदे।

*हे अल्लाह!हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृतकों पर कृपा फरमा एवं हम में से जो संकट ग्रस्त हैं,उन्हें मुक्ति प्रदान कर।

*हे अल्लाह!हमारे धर्म को सुधार दे,जो हमारे(दीन व दुनिया के)प्रत्येक कार्य की रक्षा का माध्यम है आर हमारी दुनिया को सुधार दे जिस में हमारी जीविका है और हमारी आखिरत को सुधार दे जिसमें हमारा(अपने गंतव्य की ओर)लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक भलाई में वृद्वि का कारण बना दे और हमारी मृत्यु को हमारे लिए सब विपत्तियों से छुटकारा बना दे।

*हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

عباد الله! إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذي القربى، وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي، يعظكم لعلكم تذكرون، فاذكروا الله العظيم يذكركم، واشكروه على نعمه يزدكم، ولذكر الله أكبر، والله يعلم ما تصنعون.

लेखकः

माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

२२जुलक़ादा **१४४२**हिजरी

जूबैल–सउूदी अ़रब

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान हि़फजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com